विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 19 : नई दिल्ली : 3-9 अगस्त 2018

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, अध्यात्म जगत् के उज्ज्वल नक्षत्र, महातपस्वी, अहिंसा यात्रा प्रणेता, विश्वविभूति, अणुव्रत अनुशास्ता, परम श्रद्धेय **आचार्यश्री महाश्रमण** के आज्ञावर्ती चारित्रात्माओं के

चातुर्मासिक प्रवास विक्रम संवत् २०७५

१. तमिलनाडु प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ३ संत ४८ सतियां ७३

विद्यावारिधि, धृतिधर, विमलमूर्ति **आचार्यश्री महाश्रमणजी** आदि संत-४३, संघ महानिदेशिका **महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी** आदि सतियां-७३, चेन्नई, तमिलनाडु।

२. मुनिश्री ज्ञानेन्द्रकुमारजी संत ३ कोयम्बत्तूर

३. मुनिश्री प्रशान्तकुमारजी संत २ तिरुपुर

२. राजस्थान प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ५५ संत ७६ सतियां २०५

(क) जयपुर-भरतपुर-कोटा संभाग : चातुर्मासिक प्रवास ५ संत १० सतियां १३

१. मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी संत ७ श्यामनगर, जयपुर
२. मुनिश्री धर्मचन्दजी 'पीयूष' संत ३ कोटा
३. साध्वीश्री धनश्रीजी सतियां ४ अणुविभा, जयपुर
४. साध्वीश्री कमलप्रभाजी सतियां ५ आदर्श नगर, सवाई माधोपुर
५. साध्वीश्री मंगलप्रभाजी सतियां ४ मिलाप भवन, जयपुर

(ख) अजमेर संभाग : चातुर्मासिक प्रवास १२ संत २३ सतियां ३१

१. मुनिश्री पृथ्वीराजजी (श्रीडूंगरगढ़) संत ५, मुनिश्री जम्बूकुमारजी (सरदारशहर) — बोरावड़
२. मुनिश्री सुखलालजी संत ४, मुनिश्री मोहजीतकुमारजी — भीलवाड़ा
३. मुनिश्री हर्षलालजी संत २ दौलतगढ़
४. मुनिश्री सुरेशकुमारजी संत ३ गंगापुर
५. मुनिश्री विजयराजजी संत २ जैन विश्व भारती, लाडनूं
६. मुनिश्री जयकुमारजी संत ७ जैन विश्व भारती लाडनूं (सेवाकेन्द्र)
७. साध्वीश्री विनयश्रीजी सतियां ४ छोटी खाटू
८. साध्वीश्री अमितप्रभाजी सतियां ५ किशनगढ़
९. साध्वीश्री शान्ताकुमारीजी सतियां ४ पुर
१०. साध्वीश्री जिनबालाजी सतियां ४ अजमेर
११. साध्वीश्री पावनप्रभाजी सतियां ३ ब्यावर
१२. साध्वीश्री संयमलताजी सतियां ११ लाडनूं (सेवाकेन्द्र)

(ग) बीकानेर संभाग : चातुर्मासिक प्रवास १९ संत २४ सतियां १०८

१. मुनिश्री राजकरणजी संत ५, मुनिश्री मुनिव्रतजी — गंगाशहर
२. मुनिश्री ताराचन्दजी संत ४, मुनिश्री सुमतिकुमारजी — सरदारशहर
३. मुनिश्री किशनलालजी संत ३ मोमासर
४. मुनिश्री विमलकुमारजी संत ४ श्रीगंगानगर
५. मुनिश्री शांतिकुमारजी संत ३ उदासर
६. मुनिश्री तत्त्वरुचिजी संत ५ छापर (सेवाकेंद्र)
७. साध्वीश्री पानकुमारीजी 'प्रथम' सतियां ५ तुलसी साधना केन्द्र, बीकानेर
८. साध्वीश्री पानकुमारीजी 'द्वितीय' सतियां ५ लूणकरणसर
९. साध्वीश्री हुलासांजी सतियां ४ देशनोक
१०. साध्वीश्री राजीमतीजी सतियां ८ नोखामंडी
११. साध्वीश्री मेणरयाजी सतियां ५ लाल कोठी, बीकानेर
१२. साध्वीश्री संयमश्रीजी सतियां ५ भीनासर
१३. साध्वीश्री मधुरेखाजी सतियां २२, साध्वीश्री विशदप्रज्ञाजी — गंगाशहर(सेवाकेन्द्र)
१४. साध्वीश्री प्रमोदश्रीजी सतियां ५ सुजानगढ़
१५. साध्वीश्री उज्ज्वलरेखाजी सतियां ६ कालू
१६. साध्वीश्री संघप्रभाजी सतियां४ राजलदेसर (सेवाकेन्द्र)
१७. साध्वीश्री गुप्तिप्रभाजी सतियां ४ पीलीबंगा
१८. साध्वीश्री सोमयशाजी सतियां १७, साध्वीश्री प्रसन्नयशाजी — श्रीडूंगरगढ़ (सेवाकेन्द्र)

१९. साध्वीश्री शुभप्रभाजी सतियां १८ ┐ बीदासर,
साध्वीश्री सम्पूर्णयशाजी ┘ समाधि केन्द्र
साध्वीश्री अजितप्रभाजी

(घ) जोधपुर संभाग : चातुर्मासिक प्रवास ९ संत ९ सतियां २९

१. मुनिश्री रवीन्द्रकुमारजी संत ४ ┐ सिरियारी
मुनिश्री पृथ्वीराजजी (जसोल) ┘
२. मुनिश्री दर्शनकुमारजी संत ३ ┐ बालोतरा
मुनिश्री स्वस्तिककुमारजी ┘
३. मुनिश्री देवेन्द्रकुमारजी संत २ बाड़मेर
४. साध्वीश्री चांदकुमारीजी (लाडनूं) सतियां ६
जोधपुर शहर
५. साध्वीश्री रामकुमारीजी सतियां ६ जसोल
६. साध्वीश्री भानुकुमारीजी सतियां ४ पचपदरा
७. साध्वीश्री कमलप्रभाजी सतियां ५ सरदारपुरा, जोधपुर
८. साध्वीश्री उर्मिलाकुमारीजी सतियां ५ पाली
९. साध्वीश्री रतिप्रभाजी सतियां ३ बायतू

(ङ) उदयपुर संभाग : चातुर्मासिक प्रवास १० संत ६ सतियां २४

१. मुनिश्री जतनमलजी संत २ राजनगर
२. मुनिश्री मणिलालजी संत २ केलवा
३. मुनिश्री भूपेन्द्रकुमारजी संत २ भीम
४. मुनिश्री धर्मेशकुमारजी संत ३ सायरा
५. साध्वीश्री जसवतीजी सतियां ४ कांकरोली
६. साध्वीश्री कनकश्रीजी (राजगढ़)सतियां ४ नाथद्वारा
७. साध्वीश्री गुणमालाजी सतियां ४ उदयपुर
८. साध्वीश्री साधनाश्रीजी सतियां ४ आमेट
९. साध्वीश्री सत्यप्रभाजी सतियां ३ देवगढ़
१०. साध्वीश्री कुन्दनप्रभाजी सतियां ५ लावासरदारगढ़

३. दिल्ली प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ७ संत ६ सतियां २८

१. मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' संत ६ ग्रीनपार्क, दिल्ली
२. साध्वीश्री संघमित्राजी सतियां ४ पीतमपुरा, दिल्ली (श्रा.भा.)
३. साध्वीश्री रतनश्रीजी सतियां ६ मॉडल टाडन, दिल्ली
४. साध्वीश्री कनकश्रीजी (लाडनूं)सतियां ५ शहादरा, दिल्ली
५. साध्वीश्री अशोकश्रीजी सतियां ५ कृष्णानगर, दिल्ली
६. साध्वीश्री रविप्रभाजी संतिया ४ शालीमारबाग, दिल्ली
७. साध्वीश्री कुंथुश्रीजी सतियां ४ रोहिणी, दिल्ली

४. उत्तरप्रदेश प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १ सतियां ६

१. साध्वीश्री जयप्रभाजी श्रीडूंगरगढ़ सतियां ६ नोएडा

५. हरियाणा प्रान्त : चातुर्मासिक चातुर्मासिक १२ संत ३ सतियां ६५

१. मुनिश्री कुलदीपकुमारजी संत ३ हांसी
२. साध्वीश्री मानकुमारीजी सतियां ५ टोहाणा
३. साध्वीश्री राजकुमारीजी सतियां ७ ┐ मॉडल टाउन,
साध्वीश्री मंजुप्रभाजी ┘ हिसार
४. साध्वीश्री मोहनकुमारीजी सतियां ६ सिवानी
५. साध्वीश्री कंचनकुमारीजी सतियां ४ रोहतक
६. साध्वीश्री भागवतीजी (श्रीडूंगरगढ़)सतियां ५ बरवाला
७. साध्वीश्री चन्द्रकलाजी सतियां १३ ┐ कटला-रामलीला,
साध्वीश्री पुण्यप्रभाजी ┘ हिसार
साध्वीश्री जगतप्रभाजी
८. साध्वीश्री सरोजकुमारीजी सतियां ५ नरवाणा
९. साध्वीश्री यशोधराजी सतियां ६ भिवानी
१०. साध्वीश्री सुप्रभाजी सतियां ६ सिरसा
११. साध्वीश्री संयमप्रभाजी (हांसी)सतियां ४ उचाणामंडी
१२. साध्वीश्री कुन्दनरेखाजी सतियां ४ जीन्द

६. केन्द्र शासित प्रदेश : चातुर्मासिक प्रवास १ संत २

१. मुनिश्री विनयकुमारजी सरदारशहर संत २ चण्डीगढ़

७. पंजाब प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ८ संत ६ सतियां २६

१. मुनिश्री विजयकुमारजी संत २ संगरूर
२. मुनिश्री हिमांशुकुमारजी संत ४ जगराओं
३. साध्वीश्री विद्यावतीजी 'प्रथम' सतियां ४ सुनाम
४. साध्वीश्री उज्ज्वलकुमारीजी सतियां ६ बरेटा
५. साध्वीश्री सुमनश्रीजी सतियां ५ भटिंडा
६. साध्वीश्री तिलकश्रीजी सतियां ४ धूरी
७. साध्वीश्री बसंतप्रभाजी सतियां ४ भीखी
८. साध्वीश्री प्रशमरतिजी सतिया ३ नाभा

८. गुजरात प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ११ संत ६ सतियां ४३

१. मुनिश्री संजयकुमारजी संत ४ कामरेज
मुनिश्री प्रसन्नकुमारजी
२. मुनिश्री मदनकुमारजी संत २ भुज
३. साध्वीश्री रामकुमारीजी सतियां ५ कांकरिया-मणिनगर, अहमदाबाद
४. साध्वीश्री रतनश्रीजी सतियां ५ जुली अपार्टमेंट, शाहीबाग, अहमदाबाद
५. साध्वीश्री चन्दनबालाजी सतियां ८ ओसवाल भवन, शाहीबाग, अहमदाबाद
साध्वीश्री लावण्यश्रीजी
६. साध्वीश्री ललितप्रभाजी सतियां ४ उधना
७. साध्वीश्री मधुबालाजी सतियां ५ अमराईबाड़ी, अहमदाबाद
८. साध्वीश्री शिवमालाजी सतियां ४ पर्वत पाटिया, सूरत
९. साध्वीश्री सरस्वतीजी सतियां ४ सिटी लाईट, सूरत
१०. साध्वीश्री कनकरेखाजी सतियां ४ बडोदरा
११.साध्वीश्री हेमलताजी सतियां ४ गांधीधाम

९. महाराष्ट्र प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १० संत १० सतियां ३५

१. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी संत ५ ठाणे
२. मुनिश्री कमलकुमारजी संत ३ तेरापंथ भवन, कांदीवली, मुंबई
३. मुनिश्री जिनेशकुमारजी संत २ पूना
४. साध्वीश्री पद्मावतीजी सतियां ४ शहादा
५. साध्वीश्री कैलाशवतीजी सतियां ५ भायंदर
६. साध्वीश्री सत्यवतीजी सतियां ४ नागपुर
७. साध्वीश्री जिनरेखाजी सतियां ५ वाशी
८. साध्वीश्री सोमलताजी सतियां ५ अरिहंत बिल्डिंग कांदीवली, मुंबई
९. साध्वीश्री अणिमाश्रीजी सतियां ६ कालबादेवी, मुम्बई
साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी
१०. साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी सतियां ६ धूलिया

१०. मध्यप्रदेश प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ३ सतियां ११

१. साध्वीश्री कीर्तिलताजी बैंगलोर सतियां ४ पेटलावद
२. साध्वीश्री प्रबलयशाजी छापर सतियां ३ इंदौर
३. साध्वीश्री उज्ज्वलप्रभाजी लोणार सतियां ४ रतलाम

११. छत्तीसगढ़ प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास २ सतियां ८

१. साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी सतियां ४ जगदलपुर
२. साध्वीश्री सम्यक्प्रभाजी सतियां ४ रायपुर

१२. बंगाल प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ३ सतियां १२

१. साध्वीश्री संगीतश्रीजी सतियां ४ सिलीगुड़ी
२. साध्वीश्री स्वर्णरेखाजी सतियां ४ सेंथिया
३. साध्वीश्री पीयूषप्रभाजी सतियां ४ उत्तर हावड़ा

१३. बिहार प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १ संत ३

१. मुनिश्री आलोककुमारजी संत ३ गुलाबबाग

१४. आन्ध्रप्रदेश प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १ संत ३

१. मुनिश्री अर्हत्कुमारजी संत ३ विजयनगरम्

१५. कर्नाटक प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ६ संत ४ सतियां १८

१. मुनिश्री मुनिसुव्रतकुमारजी संत २ के.जी.एफ.
२. मुनिश्री रणजीतकुमारजी संत २ यशवन्तपुर, बैंगलोर
मुनिश्री रमेशकुमारजी
३. साध्वीश्री कंचनप्रभाजी सतियां ५ गांधीनगर, बैंगलोर
४. साध्वीश्री मधुस्मिताजी सतियां ६ विजयनगर, बैंगलोर
५. साध्वीश्री लब्धिश्रीजी सतियां ३ मैसूर
६. साध्वीश्री सुदर्शनाश्रीजी सतियां ४ बल्लारी

१६. तेलंगाना प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १ सतियां ४

१. साध्वीश्री राकेशकुमारीजी सतियां ४ सिकन्दराबाद-हैदराबाद

भारत के १६ प्रान्तों में चातुर्मासिक प्रवास १२५, संत सिंघाड़े ३८, सतियों के सिंघाड़े ८७, संत १६६ सतियां ५३४ कुल ७००

समण श्रेणी

भारत : प्रवास १४ समण १, समणी ६५

तमिलनाडु

१.समणी नियोजिका चारित्रप्रज्ञाजी समणी १५ गुरुकुलवास(चेन्नई)

राजस्थान

१. समण सिद्धप्रज्ञाजी समण १ सिरियारी
२. समणी स्थितप्रज्ञाजी समणी २ रतनगढ़
३. समणी मधुरप्रज्ञाजी समणी २६ जैन विश्व भारती, लाडनूं
४. समणी मंजुप्रज्ञाजी समणी २ आसीन्द
५. समणी निर्मलप्रज्ञाजी समणी २ शार्दुलपुर
६. समणी ज्योतिप्रज्ञाजी समणी २ नोहर
७. समणी शीलप्रज्ञाजी समणी २ चूरू

असम

१. समणी भावितप्रज्ञाजी,समणी संघप्रज्ञाजी समणी ३ गुवाहाटी
२. समणी जिनप्रज्ञाजी समणी २ सिलचर

महाराष्ट्र

१. समणी मल्लिप्रज्ञाजी समणी २ घाटकोपर, मुंबई
२. समणी विपुलप्रज्ञाजी समणी २ जालना

उड़ीसा

१. समणी कमलप्रज्ञाजी समणी ३ टिटिलागढ़

पंजाब

१. समणी निर्वाणप्रज्ञाजी समणी २ लुधियाना

विदेश प्रवास ७ समणी १६

१. समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी समणी २ लंदन
२. समणी पुण्यप्रज्ञाजी समणी २ लंदन
३. समणी सन्मतिप्रज्ञाजी समणी २ न्यूजर्सी
४. समणी सत्यप्रज्ञाजी समणी २ मायामी
५. समणी कंचनप्रज्ञाजी समणी २ ह्यूस्टन
६. समणी मलयप्रज्ञाजी समणी २ ओरलेंडो
७. समणी परिमलप्रज्ञाजी समणी ४ काठमांडो

समण-१ समणी-८१ कुल-८२

विशेष दिवस : विक्रम संवत् २०७५

१. आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१३	२५ जुलाई २०१८
२. चातुर्मासिक पक्खी	आषाढ़ शुक्ला-१५	२७ जुलाई २०१८
३. २५९वां तेरापंथ स्थापना दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१५	२७ जुलाई २०१८
४. श्रीमज्जयाचार्य महाप्रयाण दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२/१३	७ सितम्बर २०१८
५. पर्युषण प्रारंभ दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२/१३	७ सितम्बर २०१८
६. पर्युषण पक्खी	भाद्रपद अमावस्या	९ सितम्बर २०१८
७. संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद शुक्ला-५	१४ सितम्बर २०१८
८. कालूगणी महाप्रयाण दिवस	भाद्रपद शुक्ला-६	१५ सितम्बर २०१८
९. विकास महोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-९	१८ सितम्बर २०१८
१०. २१६वां भिक्षु चरमोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-१३	२२ सितम्बर २०१८
११. नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान	आश्विन शुक्ला १/२-९	१०-१८ अक्टूबर २०१८
१२. भगवान् महावीर निर्वाण कल्याणक दिवस	कार्तिक अमावस्या	७ नवम्बर २०१८
१३. आचार्यश्री तुलसी का १०५वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)	कार्तिक शुक्ला-२	९ नवम्बर २०१८
१४. चातुर्मासिक पक्खी	कार्तिक शुक्ला १४	२२ नवम्बर २०१८

विशेष आयोजन : विक्रम संवत् २०७५

१. मेधावी छात्र सम्मेलन	२९-३० जुलाई २०१८
२. उपासक शिविर	२ से १२ अगस्त २०१८
३. सभा प्रतिनिधि सम्मेलन	१३ से १५ अगस्त २०१८
४. राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन	१७ से १९ अगस्त २०१८
५. प्रेक्षाध्यान शिविर	२१ से २८ अगस्त २०१८
६. प्रेक्षावाहिनी व प्रेक्षा अधिवेशन	२९-३० अगस्त २०१८

७. तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अधिवेशन	१-२ सितम्बर २०१८
८. जैन विश्व भारती अधिवेशन	२० सितम्बर २०१८
९. अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् अधिवेशन	२८ से ३० सितम्बर २०१८
१०. प्रेक्षाध्यान दिवस	३० सितम्बर २०१८
११. अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह	२६ सितम्बर से २ अक्टूबर २०१८
१२. अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अधिवेशन	३ से ५ अक्टूबर २०१८
१३. अणुव्रत अधिवेशन	६ से ८ अक्टूबर २०१८
१४. राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर	११ से १८ अक्टूबर २०१८
१५. डाक्टर्स सम्मेलन	२१-२२ अक्टूबर २०१८
१६. जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह	२४ अक्टूबर २०१८
१७. अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता	२५ से २७ अक्टूबर २०१८
१८. जीवन विज्ञान सेमिनार	२७-२८ अक्टूबर २०१८
१९. ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर	२९ से ३१ अक्टूबर २०१८
२०. इन्टरनेशनल प्रेक्षाध्यान शिविर	११ से १८ नवम्बर २०१८
२१. जैन विद्या परीक्षा	१७-१८ नवम्बर २०१८

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण चेन्नई में

तमिलनाडु के राज्यपाल ने किया परम पूज्यप्रवर का अभिनन्दन

२२ जुलाई। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम पूज्यप्रवर के चेन्नई पदार्पण के संदर्भ में नागरिक अभिनन्दन समारोह के रूप में आयोजित हुआ। तमिलनाडु के राज्यपाल श्री बनवारीलाल पुरोहित मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने आते ही पूज्यप्रवर को सविनय वंदन किया। 'तमिल स्टेट सोंग' से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। प्रवास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जयंतीलाल सुराणा ने स्वागत अभिभाषण प्रस्तुत किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'परम पूज्य आचार्यवर जहां भी जाते हैं लोगों को सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देते हैं। सबको प्रबोध देने और उनके विवेक चेतना के जागरण के लिए आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा कर रहे हैं और अहिंसा यात्रा करते हुए सैंकड़ों-सैंकड़ों गांवों व नगरों व शहरों में पधारे हैं। महानगरों में भी आपका प्रवास होता है और जहां प्रवास करते हैं, वहां प्रतिदिन प्रवचन करते हैं। आचार्यप्रवर लोगों को प्रबोध देने के साथ-साथ उनकी विवेक चेतना को भी जगाते हैं और उन्हें समझाते हैं कि उनके लिए क्या करणीय है और क्या अकरणीय है। आचार्यप्रवर अपने प्रवचनों में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बात बताते हैं। क्योंकि इनके द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन में ऊर्ध्वारोहण कर सकता है। परम पूज्य आचार्यप्रवर चेन्नई में पधारे हैं। हम विश्वास करते हैं कि चेन्नई की जनता भी गुरुदेव के प्रवास से, सान्निध्य से और प्रवचनों से लाभान्वित होगी। मैं चार पंक्तियां कहना चाहूंगी--

महातपस्वी महाश्रमण के तप का तेज निराला है,
चरण टिके जँह आर्यदेव के बिखरा नया उजाला है।
अर्धसदी के बाद पधारे भक्तों के अरमान फले,
सार्थक मंगलमय हो सबके गुरु सन्निधि के पल उजले।।

गुरुदेव की सन्निधि में जितने लोगों के जितने पल बीतें, उतने पल सार्थक हों, मंगलमय हों, ऐसी मंगलकामना करती हूं।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'मैत्री एक ऐसा तत्त्व है, जिससे हमारी चेतना

निर्मलता को प्राप्त होती है और दूसरों पर भी उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। आदमी के मन में न केवल मनुष्यों के प्रति, अपितु हर प्राणी के प्रति अहिंसा और मैत्री की भावना रहनी चाहिए। कोई हमारा बुरा करे, उसके प्रति भी मंगल मैत्री की भावना रहनी चाहिए और यह भावना रहनी चाहिए कि वह बुरी वृत्ति को छोड़कर अच्छा बन जाए।'

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा की जानकारी प्रदान करते हुए कहा--'हम लोग अहिंसा यात्रा के अंतर्गत तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आए हैं। हम जैन साधुओं की व्यवस्था है कि सामान्यतया श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक--इन चार महीनों में एक ही क्षेत्र में प्रवास करना। शेष आठ महीने में भ्रमण हो सकता है। चतुर्मास का समय धार्मिक आराधना की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। चतुर्मास में कितने-कितने कार्यक्रम भी हो जाते हैं। लोगों को भी धार्मिक साधना और प्रवचन श्रवण का अनुकूलतापूर्ण अवसर चतुर्मास के दौरान प्राप्त हो सकता है।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'भगवान के प्रति भक्ति की जाती है, वह अच्छी बात है, किन्तु उससे ज्यादा अच्छा है उन्होंने जो संदेश/उपदेश दिया है उस पर चलने का प्रयास करना। प्रभु से प्यार रखने वाला इंसान से घृणा करे तो प्रभु से प्यार रखने का कितना क्या अर्थ रह जाता है। अहिंसा व मैत्री का भाव होता है तो अभय का विकास हो सकता है और समाज, राष्ट्र में शांतिपूर्ण माहौल बन सकता है।

आज राज्यपाल महोदय के रूप में एक विशिष्ट व्यक्तित्व का समागमन हुआ है। पहले गुवाहाटी में आना हुआ था और आज पुनः आगमन हुआ है। राज्यपाल राज्य के प्रमुख व्यक्ति होते हैं। उनका आगमन भी अपने आप में महत्त्वपूर्ण बात हो जाती है। राज्य में शांति रहे, राज्य की जनता में नैतिकता का भाव पुष्ट रहे और खूब धार्मिक, आध्यात्मिक उन्नति होती रहे, मंगलकामना।

आदमी को ईमानदारी के प्रति रुझान रखना चाहिए। शुद्ध साधनों से प्राप्त पैसा शुद्ध होता है और गलत तरीकों से अर्जित पैसा अशुद्ध होता है। गृहस्थों को यथासंभव यह प्रयास रखना चाहिए कि उनके पास अशुद्ध पैसा न हो। धार्मिक गतिविधियों में और अधिक नैतिकता की भावना पुष्ट रहनी चाहिए। किसी रूप में नैतिकता में मैत्री का भाव भी सन्निहित है। राज्य की जनता नशामुक्त रहे तो अपराधों में भी कमी आ सकती है।'

आचार्यश्री महाश्रमण केवल तेरापंथ के ही नहीं, संपूर्ण राष्ट्र के हैं--महामहिम राज्यपाल

तमिलनाडु राज्य के राज्यपाल श्री बनवारीलाल पुरोहित ने कहा--'मुझे जब यह जानकारी मिली कि अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारे चेन्नई में पधार रहे हैं, मैं मन से बहुत आनंदित हुआ। मुझे आचार्यश्री के दर्शन करने का दुबारा अवसर मिला है। मैं गुवाहाटी में राज्यपाल था तो मुझे निमंत्रण मिला और मैं दर्शन करने पहुंच गया। एक बार तो मैं दोपहर को ही पहुंच गया। मुझे आधा घंटा आचार्यश्री से मार्गदर्शन मिला। बड़े प्रेम और आदर के साथ हमने महाराजश्री को विदाई दी। विदाई के अवसर पर मैं दो-तीन किलोमीटर साथ चला भी था, किन्तु यह कल्पना नहीं की थी कि फिर से चेन्नई में राज्यपाल की हैसियत से स्वागत करने के लिए उपस्थित हो जाऊंगा। यह किसी दैविकशक्ति के कारण ही संभव हो पाया है और वह दैविकशक्ति हमारे सामने आचार्यश्री के रूप में विराजमान हैं।

आचार्यश्री ने ४४००० किलोमीटर की पैदल यात्रा कर ली है। यह सुनकर साधारण आदमी को चक्कर आ सकता है कि कैसे संभव हो सकता है? मैं १०१ प्रतिशत विश्वास के साथ कह सकता हूं कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के साथ में कोई दैविकशक्ति है, अन्यथा ऐसा संभव नहीं हो सकता। आचार्यश्री ने अपना शरीर मानवता को समर्पित कर दिया है। यह सर्वोच्च त्याग है। इससे बड़ा त्याग मानव जीवन में हो ही नहीं सकता। जैसे प्राचीनकाल में पाप का नाश करने के लिए महर्षि दधिचि ने अपना शरीर इन्द्र को दे दिया था। उसी प्रकार

आज के जमाने में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपना पूरा शरीर ही राष्ट्र को समर्पित कर दिया है। आचार्यश्री महाश्रमणजी मात्र तेरापंथ के ही नहीं हैं, आप पूरे राष्ट्र के हैं। आप राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। पूरे राष्ट्र ने आपका अभिवादन किया है और आपके उपदेश को भी पूरे राष्ट्र ने ग्रहण किया है। एक करोड़ से अधिक लोग तो आपकी प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प ले चुके हैं और इससे बीस गुना लोगों तक यह संदेश पहुंचा होगा। मानव मात्र को उद्वेलित और जागृत करने का कार्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने किया है। आपके इस महान कार्य के लिए आपके चरणों में शत-शत बार प्रणाम करता हूं। आप जैसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं है।

आचार्यश्री के उपदेशों को जीवन में उतार लिया तो बाद में करने के लिए जीवन में कुछ भी बाकी नहीं रहता। आप सभी इनसे मार्गदर्शन लेकर उसे अपने जीवन में उतारिए। आचार्यश्री ने कोई आदेश दिया, उसका पालन हो गया तो समझो जीवन धन्य हो गया। आज मैं आपके सामने नम्रता से कहना चाहता हूं कि आपके उपदेशों का पालन करने वाले करोड़ों लोगों में से प्रथम सौ की लिस्ट बनेगी तो उसमें एक नाम मेरा भी रहने वाला है।

मैं आपके दर्शन से पूर्व आपका व्याख्यान सुन चुका था। आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज सादा जीवन की बात करते हैं, शुद्ध पैसे की बात करते हैं, मैं वैसा ही जीवन जीता हूं। यदि सभी लोग परम पूज्य आचार्यश्री का यह सादा जीवन वाला उपदेश मान लें तो हमारे देश में भ्रष्टाचार जड़ से ही समाप्त हो जाएगा और लोग सुखी बन जाएंगे। यह रामबाण औषधि है, किन्तु कोई करे तो सही। हमारी संस्कृति धर्म पर आधारित है और धर्म की जड़ को हरा रखने का कार्य आचार्यश्री महाश्रमणजी कर रहे हैं। आचार्यश्री के प्रवचन को सुनकर उसे ग्रहण करना है। चतुर्मास के दौरान होने वाले आचार्यश्री के प्रवचन जीवन में उतर जाएं तो विश्वास के साथ कहता हूं कि आपका जीवन रूपान्तरित हो जाएगा। मेरा यह परम सौभाग्य है कि मुझे आचार्यश्री के पुनः दर्शन करने का अवसर मिला। आचार्यश्री में अद्भुत शक्ति है, इसलिए ही मुझे यहां एडवांस में भेज दिया गया और आज मैं आपकी सन्निधि में उपस्थित हो पाया। वर्षों-वर्षों तक राष्ट्र की जनता को आपसे मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे, निश्चय ही भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का सपना साकार हो सकेगा।'

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष और चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति-चेन्नई के महामंत्री श्री रमेशचन्द बोहरा ने आभार ज्ञापित किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के उपरान्त राज्यपाल महोदय पूज्यप्रवर के साथ पैदल चलते हुए पूज्यप्रवर के प्रवास हॉल में पहुंचे। वहां पूज्यप्रवर का उनसे संक्षिप्त वार्तालाप का क्रम चला। पूज्यप्रवर ने उन्हें गुवाहाटी के बाद की यात्रा के विषय में जानकारी दी तो वे बोले--'आपके चेन्नई पदार्पण की बात सुनकर मुझे बहुत आनंद की अनुभूति हुई।' उपस्थित संतों में से एक ने कहा--'आपके भाषण में आपकी श्रद्धा स्पष्ट झलक रही थी।' वे बोले--'मैं हमेशा दिल की बात ही बोलता हूं। मुझे जो लगा, मैंने वही कहा और यह हर एक व्यक्ति की भावना है। आप राष्ट्र के लिए बहुत महान कार्य कर रहे हैं। आप के प्रति सबके मन में सम्मान की भावना है। इतनी लंबी पदयात्रा करना बिना किसी डिवाइन पावर के संभव नहीं है। मैं आपके आदेश पर चलने की पूरी कोशिश करता हूं। आपने यहां आकर बहुत बड़ी कृपा की, इससे मैं आपके दर्शन कर पाया। आप राष्ट्र की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं। मेरा बार-बार प्रणाम स्वीकार करें।' आचार्यप्रवर से मंगलपाठ सुनकर उन्होंने विदा ली।

आज तमिलनाडु के डीजीपी श्री ए.के. राजेन्द्रन ने सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। वे जिस समय आए, उस समय पूज्यप्रवर प्रवचन पंडाल में विराजमान थे और उसके बाद तमिलनाडु राज्यपाल पूज्यप्रवर के साथ वार्तालाप कर रहे थे, इसलिए करीब आधा घंटा तक पूज्यप्रवर के दर्शन की प्रतीक्षा में बाहर खड़े रहे। वे मूलतः तिरुवन्नामलै से हैं। इस संदर्भ में वे बोले कि 'आचार्यश्री! जिस समय आपका तिरुवन्नामलै में आपका पदार्पण होगा, मैं आपके स्वागत में उपस्थित रहूंगा।'

आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के साथ जैन साधुचर्या की भी अवगति प्रदान की। वे बोले-- 'स्वामीजी! आप बहुत महान कार्य कर रहे हैं।'

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत पूज्य सन्निधि में

२३ जुलाई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व मुख्यमुनिश्री ने आचार्यप्रवर द्वारा रचित 'तेरापंथ अधिराज, भिक्षु स्वामी पधारो जी' गीत का संगान किया।

आज के कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत पूज्य सन्निधि में समुपस्थित हुए। उन्होंने आते ही पूज्यप्रवर को वंदन किया। तदुपरान्त वे मंचासीन हुए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में भाग्य और पुरुषार्थ को विवेचित किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'गुस्सा आदमी का शत्रु होता है, क्योंकि वह आत्मा का नुक्सान करता है। जिन्होंने सेवा को अपना धर्म मान लिया है और उसके लिए स्वयं को समर्पित कर दिया है, उन्हें किसी भी स्थिति में गुस्सा नहीं करना चाहिए। कार्यकर्ता कार्यवश गांवों आदि में जाता है तो उसे कहीं सोने के लिए धरती मिल सकती है तो कहीं अच्छे पलंग भी मिल सकते हैं। कहीं साधारण भोजन तो कहीं मनोज्ञ स्वादिष्ट भोजन भी मिल सकता है। कहीं अपमान तो कहीं सम्मान हो सकता है। इन द्वंदात्मक स्थितियों में भी आदमी को गुस्से में नहीं आना चाहिए। गुस्सा करना आदमी की पहली हार होती है। दुनिया अच्छा कार्य करने वाले की भी निंदा कर सकती है।

कोई कुछ भी आरोप लगाए, कार्यकर्ता को यह ध्यान देना चाहिए कि यह आरोप सही है या नहीं? यदि आरोप सही है तो उसे स्वयं का सुधार करना चाहिए। यदि आरोप निराधार और झूठा है तो झूठा आरोप लगाने वाला व्यक्ति तो हल्के स्तर का होता है। इसलिए वह दया का पात्र होता है। उसके लिए तो यह मंगलकामना करनी चाहिए कि उसका भी उत्थान हो, भला हो। ऐसे हल्के स्तर वाले व्यक्ति पर गुस्सा क्यों करना चाहिए।

आवेश के द्वारा व्यक्ति स्वयं का नुक्सान कर लेता है। आदमी को अपने गुस्से पर नियंत्रण रखना चाहिए। कड़ी बात कहना एक बात है और गुस्सा करना दूसरी बात है। कड़ी बात कहते हुए भी आवेश में नहीं आना चाहिए। कड़ी बात इस रूप में कहनी चाहिए कि सामने वाला समझ जाए, किन्तु वह भी गुस्से में न आए। गुस्सा प्रीति का नाश करने वाला होता है।

आवेश की अवस्था में किया हुआ निर्णय गलत भी हो सकता है। इसलिए कोई भी निर्णय मन की शांत अवस्था में करना चाहिए। परिवार में ज्यादा गुस्सा करेंगे तो परिवार में कलह हो सकेगा। परिवार के लोगों में गुस्सा करने वाले सदस्य के प्रति इज्जत का भाव कम हो सकेगा। व्यापार में गुस्सा करेंगे तो ग्राहक आने कम हो सकेंगे। समाज में ज्यादा गुस्सा करने वाले को समाज अध्यक्ष का स्थान क्यों देगा। इस प्रकार गुस्से से सामाजिक प्रतिष्ठा भी कम हो सकती है। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो गुस्से से आत्मा के पापकर्म का बंध हो सकता है। गुस्से से शारीरिक नुक्सान भी हो सकता है और मानसिक अशांति भी हो सकती है। इसलिए आदमी को गुस्से में अपनी शक्ति को नहीं गंवाना चाहिए। शक्ति होने पर भी गुस्सा नहीं करना विशेष बात होती है। शांति रखने वाला कार्यकर्ता साफल्य को प्राप्त हो सकता है।

उपशम के द्वारा गुस्से को शांत करने का प्रयत्न करना चाहिए। गुस्सा आने लगे तब श्वास को लंबा करने का प्रयास करना चाहिए। श्वास लेते समय 'उवसमेण' और छोड़ते समय 'हणे कोहं' को याद करते रहना चाहिए। यह गुस्से को कम करने का एक उपाय है। अपने मन को शिक्षित, प्रशिक्षित करना चाहिए कि गुस्सा नहीं करना है। प्रयास करने से गुस्सा नियंत्रित भी हो सकता है। गुस्सा कम हो जाए तो आदमी की एक बुराई कम हो सकती है।

आज राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के श्री मोहनजी भागवत का समागमन हुआ है। वर्ष में एक बार लगभग आना हो रहा है। जो संगठन का नेतृत्व करने वाले हों और जिनके पास अनुभव हो, ज्ञान हो, चिंतन हो, मनन हो, प्रज्ञा हो और बात बताने का तरीका हो, ऐसे व्यक्तित्व को सुनने से श्रोता को कुछ ज्ञान मिल सकता है, कुछ प्रेरणा मिल सकती है, मार्गदर्शन मिल सकता है। भाषण देना एक बात है, किन्तु जिनके जीवन में कुछ विशेषताएं होती हैं, ऐसे व्यक्तित्वों का भाषण ज्यादा प्रभावकारी हो सकता है। श्री मोहनजी भागवत एक बड़े संगठन के प्रमुखत्व का निर्वहन कर रहे हैं। ऐसे व्यक्तियों का आगमन भी अपने आप में विशिष्ट बात होती है। उनसे मिलना भी अच्छा होता है। श्री भागवतजी का वक्तव्य भी सुनने को मिल सकेगा।

हम यथासंभव दूसरों की आध्यात्मिक सेवा करते रहें। उनके कल्याण का प्रयत्न करते रहें। दूसरों के कल्याण के लिए अपने श्रम और अपनी शक्ति का नियोजन करना एक त्याग और सेवा होती है। यह सेवा विशिष्ट व्यक्ति कर सकते हैं। जिनमें सच्चाई व सेवा के प्रति निष्ठा और निःस्वार्थता की चेतना हो, ऐसे लोगों का मार्गदर्शन कल्याणकारी हो सकता है तथा समस्याओं का समाधायक भी हो सकता है।'

आचार्यश्री से मिलती है ऊर्जा, इसीलिए प्रतिवर्ष आता हूं--श्री भागवत

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत ने अपने अभिभाषण में कहा--'परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में प्रतिवर्ष एक बार मुझे उपस्थित होना ही है, यह नियम मैंने अपने लिए बनाया है। देखने में हम लोगों के कार्य भले अलग-अलग हों और वास्तव में थोड़े-थोड़े अलग भी हैं, किन्तु उनका उद्गम जहां से होता है, वह धरातल एक ही है। उस धरातल पर जिनका विचरण होता है, उनके पास जाने से वह चाबी मिल जाती है, जिससे सारे ताले खुलते हैं। आचार्यश्री से आप लोगों को जो पाथेय मिलता है, वह केवल आपके सुधार के लिए ही नहीं, अपितु यह आपके घर-गृहस्थी को सही ढंग से चलाने के लिए भी उपयोगी है और समाज व राष्ट्र के हित और लोगों के कल्याण के लिए भी उपयोगी है।

मैं यहां इतनी देर बैठा, मुझे लगा ही नहीं कि मैं संघ से बाहर के किसी कार्यक्रम में बैठा हूं। हमारे यहां प्रशिक्षण होते हैं और उनमें जाना होता है और उस वर्ग के लोगों को प्रशिक्षण देना होता है, प्रेरित करना होता है। इस वर्ष वहां मुझे वही विषय दिया गया, जो आचार्यश्री ने हम सभी को बताया कि कार्यकर्ता को कैसा होना चाहिए। आचार्यश्री ने अभी उदारता के साथ कहा कि मेरे (भागवत के) पास अनुभव है, किन्तु मेरे पास क्या अनुभव है। आचार्यश्री तो अनुभव के भंडार हैं।

मैं कार्य करता हूं उसके लिए 'टैब' रखता हूं, इमेल के लिए उसकी आवश्यकता रहती है, उस 'टैब' को चार्ज रखना होता है। आजकल चार्ज करने के लिए पावर बैंक का उपयोग किया जाता है, लेकिन पावर बैंक को भी चार्ज करना होता है। मुझे लोग पावर बैंक मानते हैं कि ये हमें प्रेरणा देते हैं। मुझे भी चार्जिंग की जरूरत रहती है। जिस ऊर्जा के आधार पर मेरी बेट्री चार्ज होती है, उस ऊर्जा के स्रोत तो आचार्यश्री महाश्रमणजी हैं। इसलिए मैं प्रतिवर्ष आपकी मंगल सन्निधि में उपस्थित होता हूं। आचार्यश्री की ही बातों को मैं बाहर दूसरे रूप में बताता हूं।

मैं यहां बार-बार इसलिए आता हूं कि यहां से विशेष ऊर्जा के साथ-साथ विधाओं की भी समानता प्राप्त होती है। दोनों का अनुशासन लगभग समान प्रकृति का है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और तेरापंथ का तो पांच पीढ़ियों का संबंध है। इस कारण परस्पर आत्मीयता भी है। आचार्यश्री की प्रेरणा से हम सभी अपने में बदलाव लाएं तो देश में बदलाव आ सकेगा। डरना नहीं, डराना नहीं और सब लोगों को अपने समान देखने से जीवन में शांति आ सकती है। इन सब की प्रेरणा देने वाले, सत्य ही बोलने वाले और सत्य की ही प्रेरणा देने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे जितने संत हैं, वे ही हम सबके मार्गदर्शक हैं, ऐसा संघ मानता है। आचार्यश्री का

मार्गदर्शन इहलोक और परलोक में सर्वथ उपयोगी है। आचार्यश्री की प्रेरणा से आप सभी अपने जीवन को सुधारें तो समाज में भी बदलाव आ सकता है। एक बार मैं पुनः आचार्यश्री को वंदन कर अपनी बात समाप्त करता हूं।'

प्रवास व्यवस्था समिति के कोषाध्यक्ष श्री ललित दूगड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आज मध्याह्न में परम पूज्य आचार्यप्रवर और श्री भागवतजी के बीच करीब एक घंटे तक वार्तालाप का क्रम रहा। वार्तालाप के अंश पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

२४ जुलाई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में भगवान महावीर और मेघकुमार के घटना वृत्तांत को सुनाते हुए अनुकंपा को विवेचित किया।

कार्यक्रम के दौरान भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महिला मोर्चा की अध्यक्षा श्रीमती विजया रहाटकर ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा--'मेरा सौभाग्य है कि आज मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन और प्रवचन श्रवण का सुअवसर मिला। आचार्यश्री! आप मानवता के लिए बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं। आज आपने हमें जो संदेश दिया है, मैं विश्वास दिलाती हूं कि भारतीय जनता पार्टी का महिला मोर्चा उसके आधार पर कार्य करता रहेगा। आपका आशीर्वाद भारत के संपूर्ण महिला समाज पर बना रहे।'

कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का भी उद्बोधन हुआ। भाजपा राष्ट्रीय महिला मोर्चा की धार्मिक व सामाजिक संगठन की प्रभारी श्रीमती सुमन नाहटा ने श्रीमती विजया रहाटकर का परिचय प्रस्तुत किया। जैन विश्व भारती के अंतर्गत समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष श्री मालचन्द बैंगाणी ने संकाय की गतिविधियों के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्य भिक्षु जन्मदिवस एवं बोधि दिवस

२५ जुलाई। आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी। तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता महामना परम पूज्य आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस और बोधि दिवस। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में आचार्य भिक्षु की बोधि प्राप्ति के प्रसंग को प्रस्तुत करते हुए उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन पर भाग्य का भी प्रभाव होता है। भाग्य साथ देता है तो आदमी कितना आगे बढ़ जाता है। भाग्य के साथ के बिना आदमी आगे नहीं बढ़ पाता, उसे सफलता नहीं मिलती।

संत भीखणजी संत बनने से पूर्व गार्हस्थ्य में रहे। उनका जन्म आज के दिन अर्थात् आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को हुआ। मारवाड़ के कंटालिया गांव को संत भीखणजी की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। वह क्षेत्र भी महिमामंडित बन जाता है, जहां पर जन्म लेने वाला कोई बच्चा विशिष्ट व्यक्ति बन जाता है। महापुरुषों की जन्मभूमि भी गरिमामय बन जाती है। न केवल जन्मभूमि, वे माता-पिता भी धन्य हो जाते हैं, जिनकी संतान कुछ विशेष अच्छा कार्य करने वाली बन जाती है। अपने पुरुषार्थ और भाग्य से परोपकार करने में आगे बढ़ जाती है।

पूर्व जन्म का प्रभाव वर्तमान जीवन पर रहता है। आदमी की ज्ञानवत्ता या अज्ञानवत्ता, सुस्वास्थ्य या रुग्णावस्था, वैराग्य या रागात्मकता, ख्याति सम्पन्नता या बदनामी आदि स्थितियों के संदर्भ में गहराई में जाएं तो वर्तमान जीवन पर पिछले जन्म का प्रभाव भी दिखाई दे सकता है। संत भीखणजी के मन में जो साधु बनने की भावना पैदा हुई, उसमें उनके पिछले जन्म की साधना का प्रभाव भी रहा होगा, ऐसा प्रतीत हो रहा है। संसारी जीवन में उन्होंने पाणिग्रहण भी किया। बगड़ी गांव से उनकी शादी का संबंध जुड़ा और उनके एक संतान भी हुई। यह एक सांसारिक स्थिति है, पर आध्यात्मिक स्थिति यह है कि शादी हो जाने के बाद भी उनमें वैराग्य और साधना

की भावना थी। योग ऐसा बना कि दोनों (पति/पत्नी) साधना करने के इच्छुक बन गए। ऐसे कुछ-कुछ व्यक्ति होते हैं, जो शादी के बाद युगल रूप में दीक्षा ले लेते हैं।

भीखणजी और उनकी पत्नी की यही भावना थी कि दोनों दीक्षा लेंगे। शादी के बाद भी उन्होंने विशिष्ट साधना का क्रम शुरू किया। दोनों ने मानों तपोयज्ञ प्रारम्भ किया, किन्तु दोनों की सहदीक्षा नियति को मंजूर नहीं थी। आदमी को नियति के सामने मानों प्रणत होना होता है। वह सोचता कुछ है और नियति में मानों और कुछ होता है। भीखणजी अकेले ही रह गए। उनका मन जल्दी दीक्षा लेने के लिए और ज्यादा उत्सुक हो गया। दीक्षा के लिए मां की आज्ञा चाहिए थी, किन्तु वे आज्ञा देने की इच्छुक नहीं थीं। (पूज्यप्रवर ने भीखणजी को दीक्षा की अनुमति प्राप्त होने तक के घटनाप्रसंग का वर्णन किया।)

बगड़ी में भीखणजी की रघुनाथजी महाराज के द्वारा दीक्षा हो गई। एक बुद्धिमान युवक रघुनाथजी महाराज के टोले में दीक्षित हो गया। वैराग्यवान, बुद्धिमान और समझदार साधु संघ के लिए अच्छा होता है। संत भीखणजी का रघुनाथजी महाराज के पास अध्ययन का क्रम चलता। उस दौरान संत भीखणजी के मन में जिज्ञासाएं भी पैदा होतीं। अपने गुरु से प्रश्न भी करते। उन्हें समाधान दिया जाता, उससे वे पूरा संतुष्ट नहीं होते। यह क्रम चलता रहा। रघुनाथजी महाराज के टोले में भीखणजी एक मेधावी मुनि के रूप में उभरते साधु बन गए। धर्मसंघ के आंतरिक परिवेश में संभवतः यह संभावना का रूप बन गया कि संघ के भावी आचार्य तो भीखणजी ही हैं। (पूज्यप्रवर ने राजनगर का घटनाप्रसंग आंशिक रूप में सुनाते हुए कहा--'अभी साध्वीप्रमुखाजी ने राजनगर का घटनाक्रम फरमा दिया था। इस रूप में जन्म से लेकर बोधि प्राप्ति के प्रसंग तक का घटनाक्रम आज बता दिया गया।)

आचार्य भिक्षु का जन्मदिवस जो बोधि दिवस के रूप में प्रतिष्ठित है। इस अवसर पर मैं आचार्य भिक्षु को श्रद्धा के साथ वंदन करता हूं। उनसे हमें प्रेरणा मिलती रहे। जिस किसी रूप में यथौचित्य उनका संरक्षण और उनकी छत्रछाया मिलती रहे।'

कार्यक्रम में मुनि मननकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी और समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने भी आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व और कर्तृत्व के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी प्रमिलाकुमारीजी ने आचार्य भिक्षु के प्रति काव्यांजलि अर्पित की। श्री गौतमचंद सेठिया ने भी आचार्य भिक्षु के प्रति अपने विचार व्यक्त किए।

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति विभाग के अंतर्गत आगम 'भगवई खण्ड-१' पर आधारित आगम मंथन प्रतियोगिता की प्रश्न पुस्तिका जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द बोहरा तथा समण संस्कृति विभागाध्यक्ष श्री मालचन्द बैंगाणी ने पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की।

समण संस्कृति संकाय के विविध आयोजन

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में २३ से २५ जुलाई तक जैन विश्व भारती के समण संस्कृति विभाग द्वारा विविध कार्यक्रम समायोजित हुए। २५ जुलाई २०१८ को पूज्यप्रवर के सान्निध्य में जैन विद्या पाठ्यक्रम का बीसवां दीक्षांत समारोह समायोजित हुआ। इस समारोह में ५० लोगों को 'विज्ञ' उपाधि प्रदान की गई तथा वरीयता प्राप्त ७१ लोगों को सम्मानित भी किया गया। 'आवस्सयं' पर आधारित आगम मंथन प्रतियोगिता के विजेताओं तथा जैन विद्या कार्यशाला में वरीयता प्राप्तकर्ताओं को भी इस समारोह में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द बोहरा तथा समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष श्री मालचंद बैंगाणी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

संकाय के अंतर्गत आंचलिक संयोजकों, केन्द्र व्यवस्थापकों आदि की त्रिदिवसीय कार्यशाला भी समायोजित हुई। जिसमें दीक्षांत समारोह, आगम मंथन प्रतियोगिता में वरीयता प्राप्त प्रतियोगी, जैन विद्या कार्यशाला के वरीयता प्राप्त प्रतिभागी आदि भी संभागी बने। इस कार्यशाला के अंतर्गत संभागियों को पूज्यप्रवर ने जैन विद्या के अध्ययन के क्षेत्र में आगे बढ़ने तथा आगामी वर्ष में संबोधि ग्रंथ का स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान की। मुनि योगेशकुमारजी, जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी तथा मुनि मननकुमारजी के वक्तव्य भी हुए।

धर्म की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं चतुर्मास के चार माह

२६ जुलाई। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी। चातुर्मासिक चतुर्दशी। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'हाजरी' वाचन के संदर्भ में समुपस्थित साधु-साध्वियों तथा विशाल जनता की उपस्थिति में परम पावन आचार्यप्रवर ने कहा--'साधु के लिए चतुर्मास एक बंधन होता है। हर बंधन खराब नहीं होता। कोई बंधन सुरक्षा के लिए भी होता है। चतुर्मास में चार माह का समय मिल जाता है। इस समय तपस्या, लेखन, अध्ययन आदि कार्य व्यवस्थित रूप में किए जा सकते हैं। विहारों में तपस्या आदि करने में कुछ कठिनाई हो सकती है। लोगों को भी चतुर्मास में एक जगह रहकर सेवा करने, प्रवचन श्रवण करने आदि का लाभ व्यवस्थित रूप में मिल सकता है। इसलिए यह चतुर्मास का बंधन हमारे लिए और श्रावक समाज के लिए साधना में सहायक बन सकता है।

बारह माह में चतुर्मास के चार माह धर्म की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। चतुर्मास के दौरान मौसम की अनुकूलता रहती है तो तपस्या करने में सुविधा हो सकती है। भाद्रव माह में पर्युषण होने से धर्माराधना अच्छी हो सकती है। आश्विन माह में नवरात्र का समय भी साधना के लिए अच्छा माना जाता है। जैन शासन में चतुर्मास का क्रम प्राचीनकाल से चला आ रहा है।

चतुर्मास में ज्ञानाराधना होनी चाहिए। साधु-साध्वियों को चतुर्मास के दौरान यथासंभव आगम स्वाध्याय करना चाहिए। सवेरे अखबार नहीं, आगम आदि अच्छे ग्रन्थ पढ़ने अथवा पढ़ाने का क्रम अधिक अच्छा हो सकता है। बालमुनियों को उस समय सीखना करने का प्रयत्न करना चाहिए। इस रूप में सुबह-सुबह ज्ञानाराधना होनी चाहिए।

श्रावक-श्राविकाएं पच्चीस बोल को याद रखने का प्रयास करें, यह काम्य है। साथ में जीव-अजीव पुस्तक का अध्ययन/अध्यापन भी होना चाहिए। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं को प्रवचन सुनना चाहिए और उस दौरान सामायिक करनी चाहिए। प्रवचन श्रवण से अच्छी खुराक मिल सकती है।

चतुर्मास में दर्शनाराधना भी होनी चाहिए। श्रद्धा मजबूत रहनी चाहिए। जिनेश्वर भगवान और सच्चाई के प्रति श्रद्धा दृढ़ रहनी चाहिए। सच्चाई चाहे कहीं मिले, किसी देश में, किसी वेश में, किसी परिवेश में, किसी संप्रदाय में, आदमी को उसका समर्थक रहना चाहिए। सच्चाई के प्रति निष्ठा दर्शन शुद्धि का एक उपाय है। तेरापंथ समाज के आठ वर्ष से अधिक आयु वाले लोग सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार कर लें तो सम्यक् दर्शन की ओर गति/उसकी प्राप्ति/उसकी पुष्टि का क्रम बन सकता है। देव--वीतराग भगवान, गुरु--शुद्ध साधु, निर्ग्रन्थ और धर्म--केवलिप्रज्ञप्त तत्त्व के प्रति गहरी श्रद्धा और निष्ठा का भाव दृढ़ रहना चाहिए।

चारित्राराधना--साधु अपने चारित्र को पुष्ट करने का प्रयास करे। तपस्या से साधु के व्रत की पुष्टि होती है। श्रावक को तपस्या से निर्जरा का लाभ मिलता है और उससे संयम भी होता है। श्रावक को बारह व्रतों को समझकर उन्हें धारण करने का प्रयास करना चाहिए। उससे आगे सुमंगल साधना को समझकर उसका अभ्यास करने का प्रयत्न करना चाहिए। उससे चारित्र की संवृद्धि हो सकती है। इस प्रकार चारित्रात्माएं अपने चारित्र को पुष्ट और निर्मल रखने का प्रयास करें तथा श्रावक देश चारित्र को वृद्धिंगत और पुष्ट करने का प्रयास करें, यह काम्य है।

तपस्या--चतुर्मास के संदर्भ में अभी (त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा को) तेले की बात है। कितने लोगों ने अपने आपको उससे जोड़ा होगा। उपवास की बारियों (हर दिन उपवास) का क्रम भी चलना चाहिए लम्बी तपस्याएं--ग्यारहरंगी, सतरंगी, पचरंगी आदि यथानुकूलता होनी चाहिए। व्यक्तिगत रूप में भी अठाई आदि तपस्या यथासंभव की जा सकती है। तपस्या भी साधना है। चतुर्मास में उसका क्रम भी अच्छा चलना चाहिए। इन सबके साथ वीर्याराधना होनी चाहिए। आदमी ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना, चारित्राराधना और तपःआराधना में अपनी शक्ति का नियोजन करने का प्रयास करे। (पूज्यप्रवर ने चारित्रात्माओं के दर्शन, उपासना, बृहत् मंगलपाठ श्रवण, शनिवार को सायं सात से आठ बजे के बीच सामायिक, पाक्षिक प्रतिक्रमण आदि करने की प्रेरणा भी प्रदान की।)

आज चातुर्मासिक चतुर्दशी है। कल चतुर्मास लगने वाला है। यह चातुर्मासिक चतुर्दशी मानों प्रेरणा दे रही है कि चतुर्मास लगने वाला है, उसका अच्छा उपयोग करना है।

गुरुकुलवास में चेन्नई चतुर्मास में इतने ठाणे साथ में हैं, यह एक विशेष बात है। न्यारां के साधु-साध्वियों को गुरुकुलवास का मौका मिला है, उन्हें कुछ विशेष अर्जन करने का प्रयास करना चाहिए। गुरुकुलवास में ज्ञान की विशेष प्राप्ति हो सकती है। नई धारणाएं हो सकती हैं, प्रेरणा मिल सकती है, प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो सकते हैं, गुरु की उपासना का अवसर मिल सकता है। चतुर्मास का समय हम सबके लिए कल्याण का निमित्त बने। शुभाशंसा।'

पूज्यप्रवर ने चतुर्मास में करणीय कार्यों आदि की जानकारी प्रदान करते हुए साधु-साध्वियों को उनसे संबंधित दायित्व सौंपे। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करते हुए बाल साधु-साध्वियों तथा नवदीक्षित समणियों को विशेष प्रेरणा प्रदान की।

हाजरी वाचन के पश्चात् बाल मुनि ध्रुवकुमारजी, मुनि पार्श्वकुमारजी, साध्वी प्रफुल्लप्रभाजी तथा साध्वी आदित्यप्रभाजी ने लेखपत्र उच्चरित किया।

२५९वां तेरापंथ स्थापना दिवस

२७ जुलाई। आषाढ़ी पूर्णिमा। २५९वां तेरापंथ स्थापना दिवस। परमाराध्य आचार्यप्रवर द्वारा मंगल महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज आषाढ़ी पूर्णिमा है। यह पूर्णिमा कुछ वैशिष्ट्य लिए हुए है। आज का दिन धर्म क्रांति का दिन है। आचार्य भिक्षु ने धर्म की नई मीमांसा की और अपना चिंतन जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। उस समय त्याग, तपस्या को महत्त्व नहीं दिया जा रहा था। आचार्य भिक्षु ने धर्म की नई कसौटियां दीं। उन्होंने संयम को धर्म की पहली कसौटी बताई। जहां संयम है, वहां धर्म है। उन्होंने दूसरी कसौटी बताई कि जिनाज्ञा में धर्म है और जो जिनाज्ञा में नहीं है, वह धर्म नहीं है। तीसरी कसौटी बताते हुए उन्होंने कहा कि धर्म अमूल्य है, उसे खरीदा नहीं जा सकता। आचार्य भिक्षु ने धर्म की चौथी कसौटी बताई कि हृदय परिवर्तन में धर्म है, बलप्रयोग में नहीं। उन्होंने धर्म की पांचवीं कसौटी बताई कि शुद्ध साध्य की प्राप्ति के लिए साधन भी शुद्ध होना आवश्यक है। आज गुरु पूर्णिमा है। हम अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं कि हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी के रूप में एक सक्षम गुरु प्राप्त हैं और आपकी सन्निधि में ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना और चारित्राराधना करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'आज तेरापंथ स्थापना दिवस है। हम लोग तेरापंथी हैं, हमें इस बात का गौरव है। हमें गौरव इस बात का है कि हम भगवान महावीर के पंथ के साथ सीधे जुड़े हुए हैं। तेरापंथ धर्मसंघ का २५८ वर्षों का गौरवशाली इतिहास है। आचार्य भिक्षु ने आज के दिन केलवा गांव

में भगवान चंद्रप्रभ के मंदिर की अंधेरी ओरी में चातुर्मासिक प्रतिक्रमण के बाद पूर्णिमा की चांदनी में शुभ मुहूर्त और शुभ बेला में अर्हतों की आज्ञा शिरोधार्य कर सिद्धों की साक्षी के साथ भाव दीक्षा स्वीकार की और इसके साथ ही तेरापंथ की स्थापना हो गई।

आचार्य भिक्षु ने जिस समय तेरापंथ की स्थापना की, वह बहुत उत्तम था। जिस धर्मसंघ में अनुशासन, विनम्रता, आचार, न्याय, संविभाग, समर्पण, अध्यात्म, योगाभ्यास, श्रम और तेजस्विता है, उसका नाम है तेरापंथ। आचार्य भिक्षु ने जिस कठोरता के साथ संयम के मार्ग पर प्रस्थान किया, वे उसी कठोरता के साथ जीवन भर चलते रहे। आचार्य भिक्षु का जीवन-दर्शन हमारे लिए प्रेरणा है। आज के दिन हम उनके जीवन को पढ़ें, उनके दर्शन को समझने का प्रयास करें तो वास्तव में हम तेरापंथ स्थापना दिवस मना सकेंगे और आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी श्रद्धा समर्पित कर सकेंगे।'

मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज २५९वां तेरापंथ स्थापना दिवस है और आज के दिन को गुरु पूर्णिमा के रूप में भी मनाया जाता है। हम सबका परम सौभाग्य का दिन है कि आज के दिन हमें तेरापंथ धर्मसंघ मिला था। आज के दिन ही हमारे धर्मसंघ को आचार्य भिक्षु के रूप में एक महान गुरु मिले थे। वे गुरु की गरिमा से युक्त थे। आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ की स्थापना की और वे उसमें सफल भी हुए। उनमें उद्यम, साहस, धैर्य, बल, बुद्धि और पराक्रम था। हमारा यह सौभाग्य है कि हमें ऐसे महान प्रतापी महामना आचार्य भिक्षु प्राप्त हुए और आज उसी परंपरा में हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है। आज गुरु पूर्णिमा के दिन हम सभी शिष्य मंगलकामना करते हैं कि परम पूज्य गुरुदेव पूर्णरूपेण निरामय रहते हुए युगों-युगों तक हमें अपनी पावन सन्निधि, शासना और मार्गदर्शन प्रदान करते रहें।'

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्यप्रवर ने २५९वें तेरापंथ स्थापना दिवस के संदर्भ में आचार्य भिक्षु द्वारा अभिनिष्क्रमण, बोधि प्राप्ति, तेरापंथ स्थापना आदि का वर्णन कर कहा--'आचार्य भिक्षु जैसे व्यक्तित्व के सामने मानों देवता भी प्रणत हो गए। आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन उन्होंने और उनके साथ वाले संतों ने 'करेमि भंते सामाइयं' के पाठ उच्चारण से नई दीक्षा स्वीकार की। आचार्य भिक्षु ने केलवा की अंधेरी ओरी में जो भाव दीक्षा स्वीकार की, हम उसे अपनी भाषा में तेरापंथ की स्थापना कहते हैं। इसलिए आषाढ़ी पूर्णिमा को तेरापंथ स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।

आषाढ़ी पूर्णिमा को मानों भिक्षु स्वामी के रूप में हमारे संघ से संबद्ध गुरु प्रकट हुए, इसलिए इसे हमारे लिए भी गुरु पूर्णिमा माना जा सकता है।

जैन श्वेताम्बर आम्नाय के तेरापंथ को आचार्य भिक्षु प्रथम गुरु के रूप में प्राप्त हुए। संगठन शक्तिशाली हो, इसके लिए संगठन के सदस्यों में संगठन के प्रति निष्ठा का होना आवश्यक होता है। संघ का महत्त्व है। संघ से भी ऊपर साधना होती है। हमारा साध्य साधना है, संघ उसमें सहायक बनता है। इसलिए संगठन एक साधन के रूप में प्रतीत हो रहा है। कभी ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि एक ओर संघहित है और दूसरी ओर व्यक्ति हित। उस स्थिति में व्यक्ति हित को गौण कर संघहित को प्राथमिकता देनी चाहिए। व्यक्ति की अपेक्षा संघ बड़ा होता है। संघ को व्यक्ति से छोटा मानना भूल होती है।

हमारे धर्मसंघ में व्यक्ति से ज्यादा संघ को महत्त्व दिया गया है। आचार्य संघ के अनुशास्ता होते हैं। इसलिए संघ में उनका सर्वोपरि महत्त्व होता है। आचार्य भिक्षु हमें गुरु के रूप में मिले। उनकी अपनी साधना और अपना तपोबल था। कोई-कोई व्यक्ति संसार में ऐसा मिल सकता है, जिसमें विशेष आत्मबल होता है। सफलता के लिए आत्मबल का बहुत महत्त्व होता है। भिक्षु स्वामी में भी कोई विशेष आत्मबल था कि वे आगे बढ़ते गए। उनके महाप्रयाण के बाद भी संघ आगे बढ़ता गया। धर्मसंघ ने अतीत में दस परम पूज्य आचार्यों को प्राप्त किया। हमारे देखने में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने संघ को विकसित करने में अपना

योगदान दिया। हम जैन श्वेताम्बर धर्मसंघ की सेवा करते रहें और संघहित को महत्त्व देते रहें। हम अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहें।'

मुनिवृंद, साध्वीवृंद और मुमुक्षुवृंद ने तेरापंथ स्थापना दिवस के संदर्भ में पृथक्-पृथक् गीत प्रस्तुत किए। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हंसराज बैताला, कल्याण परिषद के संयोजक श्री विनोद बैद तथा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री विमल कटारिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद ने 'पधारो गुरुवर राजस्थान' गीत के माध्यम से पूज्यचरणों में राजस्थान पधारने की प्रार्थना प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

परम पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज मध्याह्न २.३० से ३.०० बजे के बीच वर्षावास (चतुर्मास स्थापना अनुष्ठान) का क्रम चला। जिसके अंतर्गत निर्धारित जप आदि का प्रयोग किया गया।

सन् २०२१ का चतुर्मास मेवाड़ के भीलवाड़ा में घोषित

आखिर वह पल आ ही गया, जिसकी चतुर्विध धर्मसंघ को उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा थी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने महीनों पूर्व सन् २०२१ के चतुर्मास की घोषणा हेतु आज रात्रि आठ से नौ बजे के बीच समय का निर्धारण किया था। पूज्यप्रवर के पधारने से पूर्व ही विशाल 'महाश्रमण समवसरण' जनाकीर्ण बन गया। हजारों लोग अभी बाहर खड़े थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही पूरा पंडाल 'वन्दे गुरुवरम्' के तुमुलनाद से गुंजायमान हो उठा। पूज्यप्रवर धीर-गंभीर कदमों से गति करते हुए मंच पर पधारकर पट्टासीन हुए और सम्मुख खड़े हजारों श्रद्धालुओं पर आशीषवृष्टि की। लोग उद्ग्रीव बनकर मंच की ओर निहार रहे थे। उत्सुकता अपने चरम पर थी। सबके अपने-अपने कयास और अपने-अपने दावे थे, किन्तु पूज्यप्रवर के मुखारविन्द से घोषणा सुनने के लिए सभी उत्कर्ण बने हुए थे।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने चतुर्मास की घोषणा करने से पूर्व 'तेरापंथ अधिराज भिक्षु स्वामी पधारो जी' गीत का संगान किया।

तत्पश्चात् आचार्यप्रवर ने कहा--'जैसा की पूर्व निर्णीत है २७ जुलाई २०१८ की रात्रि में आठ से नौ बजे के बीच सन् २०२१ के चतुर्मास का निर्णय मुझे बताना है। विभिन्न क्षेत्रों के लोग उपस्थित हैं। मैं अपना निर्णय आपको बताने जा रहा हूं।' पूज्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र, बृहत् मंगलपाठ में उच्चरणीय श्लोकों आदि का पाठ किया।

तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने पट्ट से नीचे खड़े होकर कहा--'परमाराध्य भगवान महावीर को श्रद्धा के साथ नमस्कार, परम पूज्य आचार्य भिक्षु का श्रद्धा के साथ स्मरण। मेरे जीवन निर्माता, वात्सल्य प्रदाता, पथदर्शनदाता, परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और मेरे मानों भाग्यविधाता, मेरे अध्यापक-प्राध्यापक, मुझे दायित्व सौंपने वाले परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी को श्रद्धा के साथ वंदन। साध्वीप्रमुखाजी उधर विराजमान हैं, उनका अभिवादन। श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री, जो जयपुर में विराजमान हैं, को यहां खड़ा-खड़ा वंदन करता हूं। इस वंदन-स्मरण के बाद कहना चाहता हूं--**'द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि की अनुकूलता के अनुसार सन् २०२१ का चतुर्मास राजस्थान में मेवाड़ में भीलवाड़ा में करने का भाव है।'**

आचार्यप्रवर की यह उद्घोषणा सुनते ही 'ऊँ अर्हम्' की ध्वनि से पूरा पंडाल गूंज उठा। भीलवाड़ा ही नहीं, संपूर्ण मेवाड़ के निवासी व प्रवासी खुशी से झूम उठे। 'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण', 'नेमांजी रे लाल ने, घणी-घणी खम्मा' आदि घोष लगाते हुए सैंकड़ों लोग मंच के समक्ष उपस्थित हो गए। मेवाड़ी लोग प्रसन्नता से फूले नहीं समा रहे थे। कई लोगों ने भावाभिव्यक्ति देते हुए अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी तथा पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता अर्पित की।

गुरु पूर्णिमा पर राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने प्रेषित किया भावपूर्ण पत्र

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने एक पत्र के माध्यम से

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

परम पूज्य आचार्यप्रवर के प्रति अपनी भावांजलि अर्पित की। वह पत्र लेकर उनके प्रतिनिधि लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती में पहुंचे। उन्होंने पत्र के साथ शॉल, नारियल और ११०० रुपए भी प्रेषित किए थे। जैन विश्व भारती के कार्यकर्ताओं ने पत्र स्वीकार कर साधुचर्या की अवगति देते हुए अन्य उपहार व राशि स्वीकार नहीं किए। मुख्यमंत्रीजी द्वारा प्रेषित पत्र इस प्रकार है--

२०.०७.२०१८

पूज्य गुरुवर, संतश्री महाश्रमणजी,

सादर नमन।

गुरु पूर्णिमा के पुण्य अवसर पर आपका अभिनन्दन। इस पावन पर्व पर परमपिता परमेश्वर से कामना करती हूं कि हमेशा की भांति आपका आशीर्वाद मिलता रहे। आपके मार्गदर्शन में राजस्थान निरंतर सुख-समृद्धि और उन्नति की ओर बढ़ता रहे।

शुभकामनाओं के साथ

सद्भावी

वसुन्धरा राजे

(मुख्यमंत्री, राजस्थान)

२८ जुलाई। श्रावण कृष्णा प्रतिपदा। चतुर्मास का प्रथम दिन। आज प्रातः सूर्योदय के उपरान्त आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में चातुर्मासिक खमतखामणा का उपक्रम रहा। जिसके अंतर्गत साध्वीवृंद ने पूज्यप्रवर से क्षमायाचना की तो आचार्यप्रवर ने सभी साध्वियों से खमतखामणा किए। तदुपरान्त निर्धारित शब्दावली के उच्चारण के साथ मुनिवृंद व साध्वीवृंद में पारस्परिक खमतखामणा भी हुए।

आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला प्रारम्भ की। पूज्यप्रवर ने प्रथम स्थान के 'एगे आया' सूत्र को व्याख्यायित किया। पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त 'मुनिपत का व्याख्यान' के वाचन का क्रम भी आरम्भ किया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित 'माधावरम्' क्षेत्र के विधायक श्री सुदर्शनम् ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'जन-जन का कल्याण करने के लिए भगवान के रूप में हमारी विधानसभा क्षेत्र में पधारे आचार्यश्री महाश्रमणजी को मैं वंदन करता हूं और अपने क्षेत्र की समस्त जनता की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन व स्वागत करता हूं। आपके सुविचारों से पूरा वातावरण पावन हो रहा है। जीवन को शांतिमय और आध्यात्मिक समृद्धिमय बनाने की प्रेरणा देने के लिए आप लम्बी पदयात्रा करते हुए यहां पहुंचे हैं। आपकी मंगलवाणी से केवल हमारे क्षेत्र की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण तमिलनाडु की जनता को धर्म का लाभ मिलेगा। मैं आपके चरणों में बारम्बार वंदन करता हूं।'

भीलवाड़ा से समागत डॉ. डी.सी. जैन ने पुस्तक 'भारतीय राजनीति के नूतन क्षीतिज' का नौवां और दसवां खण्ड पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला